राजभाषा कार्यान्वयन समिति

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

(मान्य विश्वविद्यालय)

राजभाषा सप्ताह समारोह-2020

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा दिनांक 14.09.2020 से 18.09.2020 तक अपराह्न 2 बजे से 4 बजे तक वेब के माध्यम से संस्थान में राजभाषा सप्ताह समारोह आयोजित किया गया। जिसके अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनका विवरण निम्नवत् है-

सप्ताह समारोह का शुभारम्भ मंत्रालय द्वारा प्राप्त प्रख्यात राजनेताओं व विद्वानों के हिन्दी विषयक विचारों के सूचना पट्टों का संस्थान के सभी प्रमुख भवनों के मुख्य द्वार पर प्रदर्शन से हुआ।

दिनांक 14.09.2020

दिनांक 14.09.2020 को हिन्दी दिवस के अवसर पर "वैश्विक सन्दर्भ में राजभाषा हिन्दी की चुनौतियाँ" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय पूर्व निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा को मुख्य वक्ता के रूप में आमन्त्रित किया गया। प्रो. पाण्डेय ने संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में वक्तव्य देते हुए कहा कि हिन्दी उदार एवं लचीली भाषा है। हम आजादी के बाद से अंग्रेजी के पीछे भागते-भागते मूल ही भूल चुके हैं। ध्यान रहे बिना निज भाषा के हम त्रिशंकु की तरह बीच में लटके रहेंगे। उन्होंने बताया कि आज हिन्दी पूरे विश्व में बोली और समझी जा रही है। अंग्रेजी का दबाव हमारे मस्तिष्क में घर कर गया है उसे निकालना होगा। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी के कुलपति प्रो. गेशे ङवङ् समतेन ने कहा कि निज भाषा में ही वह सामर्थ्य है जिससे हम अपनी संस्कृति और सभ्यता को संरक्षित कर नवीन ज्ञान की तरफ अग्रसरित हो सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनुराग त्रिपाठी तथा स्वागत संस्थान के कुलसचिव डॉ. हिमांशु पाण्डेय ने किया। अन्त में संस्थान के प्रलेखन अधिकारी श्री राजेश कुमार मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दिनांक 15.09.2020

दिनांक 15 सितम्बर 2020 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संस्थान के कुलपति प्रो. गेशे ङवङ् समतेन की अध्यक्षता में कुलपति कार्यालय के समिति-कक्ष में आयोजित की गयी। बैठक में डॉ. हिमांशु पाण्डेय (कुलसचिव), डॉ. रमेशचन्द्र नेगी, डॉ. रामसुधार सिंह, श्री टी.आर. शाशनी, श्री राजेश कुमार मिश्र, डॉ. सुशील कुमार सिंह, श्री भगवान् पाण्डेय तथा डॉ. अनुराग त्रिपाठी उपस्थित हुए। बैठक के प्रारम्भ में

कुलसचिव महोदय द्वारा सदस्यों का स्वागत किया गया एवं अध्यक्ष महोदय की अनुमति से कार्यसूची के सभी मदों पर विस्तृत चर्चा की गयी।

दिनांक 16.09.2020

दिनांक 16 सितम्बर, 2020 को "राजभाषा तिमाही रपट" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री भगवान् पाण्डेय, राजभाषा परामर्शी, के.उ.ति.शि.सं., सारनाथ, वाराणसी एवं सेवा-निवृत्त वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, डी.रे.का. ने तिमाही रपट के विभिन्न मदों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने बताया कि राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुसार सामान्य आदेश, परिपत्र, अधिसूचना, नियम, ज्ञापन, संकल्प, प्रेस-विज्ञप्ति, संविदा, निविदा, करार आदि दस्तावेज अनिवार्यतः हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किये जाने हैं। राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिये जाने अनिवार्य हैं। राजभाषा नियम 1976 के नियम 3(1) एवं (2) के प्रावधानों के तहत **क** तथा **ख** क्षेत्रों से प्राप्त अंग्रेजी पत्रों के उत्तर भी हिन्दी में दिये जायँ। कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. रमेशचन्द्र नेगी ने की। संचालन डॉ. अनुराग त्रिपाठी एवं धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के सहायक कुलसचिव श्री प्रमोद कुमार सिंह ने किया।

दिनांक 17.09.2020

दिनांक 17 सितम्बर, 2020 को "आदेश, ज्ञापन, सूचना एवं पत्र लेखन" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. विचित्रसेन गुप्त, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी में हमें कार्य करने की आवश्यकता है, क्योंकि हिन्दी हमारी राजभाषा है। हिन्दी देश को एकता के सूत्र में बाँधने के साथ-साथ आत्मगौरव की अनुभूति भी कराती है। जब तक आप अपनी भाषा को सहज एवं सरल नहीं बनाएंगे, तो वह संस्कृत की तरह एक वर्ग विशेष की भाषा बनकर रह जाएगी। श्री गुप्त ने सरकारी कार्यालयों में अधिक से अधिक हिन्दी भाषा में ही पत्र-व्यवहार को बढ़ावा देने तथा हिन्दी का उपयोग चिकित्सा एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में वैज्ञानिक शब्दावली के तौर पर उपयोग में लेने की बात कही। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के प्रलेखन अधिकारी श्री राजेश कुमार मिश्र ने कहा कि हिन्दी दिवस के आयोजन हमें भाषा चिन्तन का अवसर प्रदान करते है, भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। भाषा को अपनी संस्कृति की अस्मिता एवं गौरव

के रुप में समझ लेने पर वह अपने आप समृद्ध हो जाएगी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुशील कुमार सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रामसुधार सिंह ने किया।

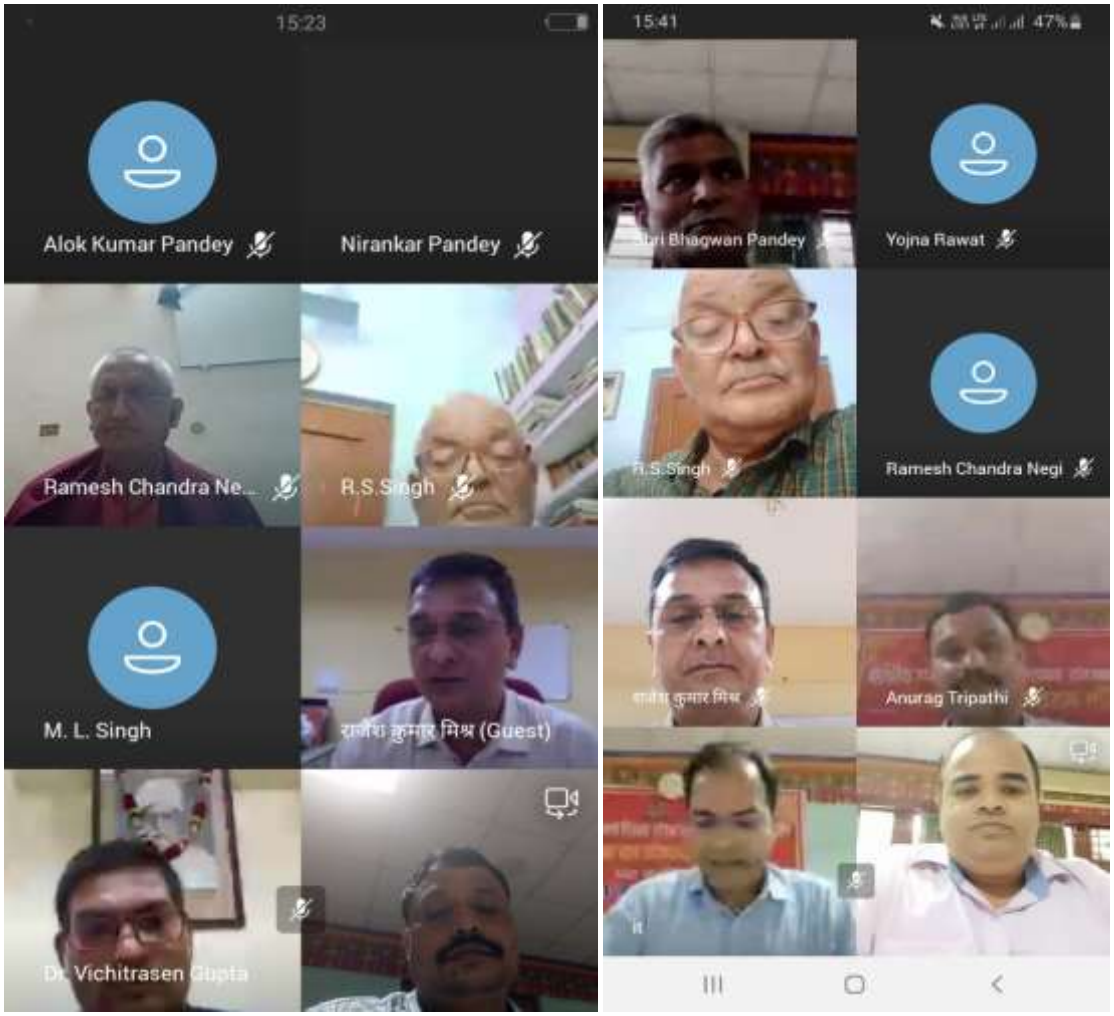

दिनांक 18.09.2020

दिनांक 18 सितम्बर, 2020 को राजभाषा सप्ताह समारोह के समापन सत्र में "वर्तमान परिदृश्य में राजभाषा हिन्दी की दशा एवं दिशा" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भाषा संस्कृति तथा संस्कार की वाहक होती है। भाषा हमारी संवेदना के अभिव्यक्तिकरण का सबसे सशक्त माध्यम है। हिन्दी भाषा में वह गुण है जो विकास के नये आयाम स्थापित कर सकती है। उक्त बातें मुख्य वक्ता प्रो. योजना रावत, हिन्दी विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ने कही। विशिष्ट वक्ता प्रो. रामसुधार सिंह ने कहा कि जब तक हिन्दी भाषा की शब्दावली सहज और सरल नहीं होगी, तब तक कार्यालयीय काम-काज में दिक्कत होगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के कुलसचिव डॉ. हिमांशु पाण्डेय ने कहा कि हिन्दी भारतीयता का अस्तित्व है। हिन्दी के विकास से देश एवं शिक्षा का विकास बढ़ेगा, इसलिए राष्ट्रभाषा हिन्दी को पूरा सम्मान मिलना चाहिए। उन्होंने संस्थान के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालयीय काम-काज में राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग की अपील की, जिससे वार्षिक कार्यक्रमों में निर्धारित लक्ष्यों की यथाशीघ्र प्राप्ति सुनिश्चित की जा सके। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनुराग त्रिपाठी एवं स्वागत

डॉ. सुशील कुमार सिंह ने किया। संस्थान के सहायक कुलसचिव श्री सुनील कुमार ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में संस्थान के अध्यापक, अधिकारी एवं कर्मचारी गण मौजूद रहे।